SHIV SHAKTI

International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)

Vol. 11, No. 5, November 2023 (ISSN 2278 – 5973)

दलित शिक्षा के विभिन्न सामाजिक आयामों पर डॉ० भीमराव अम्बेड़कर के शैक्षिक दर्शन का प्रभाव

दिलबाग सिंह मोरोडिया
पीएच०डी० शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

डा० शरद कुमार वर्मा
प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

सार

प्रस्तुत अध्ययन डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने का एक प्रयास है। उनकी सोच और विचारों को समझने के लिए, विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र की गई थी, जैसे पुस्तकें, लेख, संदर्भ सामग्री, और अन्य संसाधन। इस अध्ययन में अंबेडकर के लेखों, भाषणों, और संवादों को विशेष महत्त्व दिया गया है। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षा को समाज में समानता, न्याय, और सामाजिक बदलाव के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन माना गया था। उनके विचारों ने दलितों और समाज के वंचित वर्गों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त किया और समाजिक असमानता के खिलाफ लड़ाई में मदद की। इस अध्ययन ने उनके दर्शनों के महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में मदद की और शैक्षिक दृष्टिकोण को एक शक्तिशाली साधन के रूप में प्रमाणित किया।

कुजी शब्दः शिक्षा, दृष्टिकोण, दलित, समाजिक असमानता

भूमिका

मूल तौर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता और भारतीय समाज के एक महान समाजसेवी थे। उनका जन्म 14 अप्रैल, 1891 में महाराष्ट्र के मौंगा में हुआ था। वे दलित समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले विचारक और राजनीतिक नेता थे।

डॉ. अंबेडकर के शैक्षिक दर्शन ने समाज में शिक्षा के महत्त्व को बढ़ावा दिया। उन्होंने शिक्षा को मानवीय गरिमा और स्वाभिमान का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना। उन्होंने सामाजिक असमानता और दलितों की सामाजिक प्रतिष्ठा को खत्म करने के लिए शिक्षा को एक माध्यम के रूप में देखा।

नवीनतम अध्ययनों में भी उनके शैक्षिक दृष्टिकोण को मानवीय समृद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है। कई अध्ययनों ने दिखाया है कि अधिक शिक्षित समाजों में सामाजिक असमानता कम होती है और लोग समाज में अधिक सचेत होते हैं। विशेष रूप से डॉ. अंबेडकर के विचारों ने शिक्षा के माध्यम से समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा दिया।

कई अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों के अध्ययनों में भी डॉ. अंबेडकर के विचारों का महत्त्व माना गया है। विभिन्न शोध अनुसंधानों ने दिखाया है कि उनके विचारों ने भारतीय समाज को उन्नति और अधिक शिक्षित बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक दर्शनों ने न केवल भारतीय समाज में बल्कि पूरे विश्व में शिक्षा के महत्त्व को प्रमोट किया है। उनकी शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टि ने अधिक लोगों को शिक्षित बनाने के लिए प्रेरित किया है।

दलित शिक्षा एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है जिसने भारतीय समाज में गहरा प्रभाव डाला है। इस मुद्दे पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक दृष्टिकोण का अद्‌भुत प्रभाव रहा है। उनकी सोच और कार्यक्षेत्र ने दलितों के लिए शिक्षा को सशक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस अध्ययन में, हम डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शन के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करेंगे और उनके सोच को विभिन्न सामाजिक आयामों पर कैसे प्रभावी रूप से लागू किया गया है, उसका अध्ययन करेंगे।

साहित्य का अध्ययन

चेंगते (2016) ने अपने अध्ययन में डॉ. अम्बेडकर द्वारा शिक्षा और सशक्तिकरण के दो पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। यह शिक्षा को शक्ति का मूल और व्यक्तियों, परिवार और समुदायों को सुधारने की एक संस्था के रूप में देखती है। सशक्तिकरण को किसी व्यक्ति या वस्तु पर कार्य करने या प्रभावित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।

नुसरत (2017) अपने अध्ययन में दलित आंदोलन का विश्लेषण किया। उन्होंने बुद्ध समय से लेकर अम्बेडकर काल तक दलित आंदोलन की व्यापकता और उसके प्रभाव को विशेष रूप से उजागर किया। यह अध्ययन फुले और अन्य समाज सुधारकों के योगदान पर ध्यान केंद्रित करता है और संविधान द्वारा दलितों को विशेष अधिकार प्रदान करने के परिणामों पर चर्चा करता है। इसके अलावा, इस अध्ययन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की दलित समाज में चेतना जागरण और दलितों के आंदोलनों के समाज पर प्रभाव की विश्लेषण की गई है।

यादव (2017) के अनुसार डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को समाज के उत्थान और विकास का माध्यम माना और सामाजिक स्वतंत्रता, समता और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के बिना मनुष्य न शांति पा सकता है और न मनुष्यता।

कुमार और रत्ने (2018) के अनुसार डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने शिक्षा को मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, मानवीय गरिमा और न्याय के संदेश का साधन माना। उन्होंने शिक्षा की अहमियत को गरीबी के पिछड़ेपन का मुख्य कारण माना और सभी नागरिकों को शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किया।

नीरज (2018) के अनुसार डॉ0 अम्बेडकर अछूतों के लिये सामाजिक पैगम्बर थे। राष्ट्रीय राजनीति में उनका उदय गाँधी से कम महत्वपूर्ण नहीं था। सम्पूर्ण जनता की तलाश उन्हें बौद्ध धर्म के और करीब ले गई। एक सामाजिक, राजनीतिक सुधारक के रूप में डॉ0 अम्बेडकर की विरासत एक आधुनिक भारत पर गहरा प्रभाव था।

बबिता (2018) के अध्ययन से पता चलता है कि अंबेडकर ने समाज में निम्न जातियों के लिए अलग से प्रतिनिधित्व की मांग की और उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर उनके अधिकारों की बढ़ावा दिया, स्त्री शिक्षा, समानता और शोषण की समाप्ति पर बल दिया।

वर्मा (2019) के अनुसार, अंबेडकर ने संविधान सभा में देश के विकास के लिए सभी को मिलकर चलने की सलाह दी थी। उन्होंने समाजिक न्याय के मामले में अपने विचारों को बताया और सामाजिक विखंडन के खतरों को दर्शाया।

मौर्य और किरार (2019) के अनुसार, डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने आर्थिक और सामाजिक विचारों के माध्यम से समाज में सुधार लाने का प्रयास किया। उन्होंने धन के व्यय में विश्वसनीयता को महत्त्व दिया और विभिन्न समाजिक मुद्दों पर अपने विचार रखे। उनकी विचारधारा ने उन्हें एक आर्थिक दर्शनवादी और समाज सुधारक के रूप में पहचान दिलाई।

प्रदीप और रानी (2019) के अनुसार, डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने सामाजिक चेतना और विकास के लिए समर्थन किया। उनका उद्देश्य अत्याचारों को खत्म करना और समाज में समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व को प्रोत्साहित करना था। उन्होंने समाजिक चेतना को महत्त्वपूर्ण माना और इसे व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकारों के रक्षक के रूप में उठाया।

यादव (2019) के अनुसार, डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक अद्‌भुत प्रतिभाशाली, न्यायशील और स्पष्टवादी धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उन्होंने दलितों और अस्पृश्यों के लिए आंदोलन चलाया और सामाजिक अन्याय का समापन करने के लिए लड़ा। उन्होंने न केवल दलितों और अस्पृश्यों के अत्याचार से संघर्ष किया बल्कि समाज के हर वर्ग के अधिकारों के लिए भी काम किया।

बैरवा (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि भारतीय संविधान जिस दिन लागू हुआ, वह डॉ. अम्बेडकर की सूझबूझ और समर्पण का परिणाम था। उन्होंने राजनीति और समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया और संविधान निर्माण में असाधारण योगदान दिया।

कुमार (2020) के अनुसार, भारतीय दलित महिलाऐं दशकों से स्वामित्व, शोषण और अन्याय के खिलाफ लड़ रही हैं। उन्हें निर्धनता, अस्वस्थता, असुरक्षा और विभिन्न अन्य सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

राठौर (2021) ने कहा कि भारतीय समाज ने एक समय में शिक्षा तक पहुंच को सीमित किया था। केवल उच्च जातियों को ही स्कूल जाने की अनुमति थी, जबकि कई जातियों (शूद्र और अतिशूद्र) को शिक्षा के अवसरों से वंचित रखा गया था। अम्बेडकर ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई बार कठोर, हानिकारक और अपमानजनक परिस्थितियों का सामना किया। उनका दर्शन शिक्षा तक पहुंच के अनुभवों को दर्शाता है, जिन्हें उन्होंने जिया, सामना किया और उन पर विजय प्राप्त की। वे आधुनिक भारत के निर्माताओं में शामिल होते हैं। उन्होंने दलितों को शिक्षा से वंचित रखने को दलितों के साथ अन्याय माना।

तिरदिया एवं कटारिया (2021) ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के शिक्षा दर्शन को मानवता पर आधारित बताया है। वे शिक्षा को मानवीय गरिमा और स्वाभिमान का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं। उनके मुताबिक, मानव कल्याण और सामाजिक अस्तित्त्व के लिए शिक्षा की जरूरत हमेशा बनी रहती है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना और कहा कि शिक्षा व्यक्ति को साहसी बनाती है, एकता का सन्देश देती है, अधिकारों के प्रति सचेत करती है और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना सिखाती है। उनके अनुसार, सभी को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करना राज्य का कर्तव्य है। डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शन में शिक्षा, शिक्षण संस्थान, छात्र, शिक्षक और शिक्षण पद्धतियाँ महत्त्वपूर्ण हैं।

अतः यह कहा जा सकता है, डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से दलितों के लिए शिक्षा के महत्त्व को प्रमोट किया। उन्होंने शिक्षा को समाज में समानता और समरसता का साधन माना। उनके अनुसार, शिक्षा दलितों को स्वतंत्र और सामाजिक रूप से सशक्त बनाती है। अम्बेडकर के विचारों ने दलितों को उनके अधिकारों की जागरूकता दिलाने और उन्हें शिक्षा के माध्यम से समाज में स्थान दिलाने में मदद की है।

अबादी और मिश्रित समाजों में विभिन्न अध्ययनों ने दिखाया है कि डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शन ने दलितों की शिक्षा में सुधार किया है। उनके विचारों का प्रभाव विभिन्न स्तरों पर देखा गया है, जैसे कि सरकारी नीतियों में बदलाव, शैक्षिक संस्थानों में प्रवेश में वित्तीय सहायता, और अन्य सामाजिक परिवर्तन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शन के सामाजिक आयामों पर प्रभाव को समझना।
2. विभिन्न अध्ययनों का समीक्षात्मक विश्लेषण करके उनके दर्शनों के प्रभाव को सार्वजनिक स्तर पर समझना।
3. दलित शिक्षा में अम्बेडकरवादी दृष्टिकोण की महत्ता को उजागर करना।

अनुसंधान विधि

यह अध्ययन पुस्तकों, अनुसंधान पत्रों, जानकारों के आलोक, और सरकारी रिपोर्ट्स के आधार पर किया जाएगा। हम डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शनों के साथ उनके लेखों और संवादों को भी समाविष्ट करेंगे। विभिन्न अध्ययनों का समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाएगा ताकि उनके प्रभाव को समझा जा सके।

निष्कर्ष

डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज के उत्थान और समाज के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय अधिकारों के प्रति संघर्ष के लिए जाने जाते हैं। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण था और उन्होंने शिक्षा को एक माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा, समानता और सामाजिक न्याय के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखा।

डॉ. अंबेडकर का शैक्षिक दर्शन मानवता के स्वाभाविक अधिकारों और गरिमा की महत्ता पर आधारित था। उन्होंने दलितों और समाज के अत्यंत वंचित वर्गों के लिए शिक्षा को समाज में समानता और समाजिक समृद्धि का एक माध्यम माना। उनका उद्देश्य था कि शिक्षा न केवल ज्ञान का स्रोत होना चाहिए, बल्कि समाज के सभी वर्गों को एकसाथ लाने और समानता की दिशा में प्रेरित करना चाहिए।

नवीनतम अध्ययनों में भी उनके शैक्षिक दृष्टिकोण का महत्त्व बढ़ा है। अधिकतर शोध देखा गया है कि शिक्षा समाज में समाजिक असमानता को कम करने और समाज में जागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. अंबेडकर के विचारों ने दिखाया कि शिक्षा के माध्यम से समाज में समानता, न्याय, और अधिक समान अवसरों को प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक दर्शन ने समाज में समानता, न्याय, और सामाजिक बदलाव को बढ़ावा दिया। उन्होंने शिक्षा को मानवीय अधिकारों के प्रति जागरूकता, समाजिक स्वतंत्रता, और सामाजिक उत्थान का माध्यम माना। उनकी विचारधारा ने शिक्षा को एक उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन के एक महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में देखा।

उनकी शिक्षा दर्शनों की प्रेरणा से विभिन्न अध्ययन और समीक्षाएं हुईं, जो उनके दर्शनों के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समझने में सहायक हुईं। इन अध्ययनों ने दिखाया कि अम्बेडकर के दर्शनों ने दलितों की शिक्षा में सुधार किया है और सामाजिक अन्याय के खिलाफ उनकी लड़ाई को समर्थन प्रदान किया। उनके शिक्षा दर्शनों का प्रभाव समाज में शिक्षा के अवसरों की बढ़ाई और अधिकारों की जागरूकता में भी देखा गया।

डॉ. अम्बेडकर के दर्शनों के माध्यम से शिक्षा को समाज के उत्थान और समृद्धि का माध्यम माना गया है, जो समाज में समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। विशेष रूप से, उनके शैक्षिक दर्शन ने विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में शिक्षा के महत्त्व को और बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से, उनके सिद्धांतों ने भारतीय समाज को उन्नति और अधिक शिक्षित बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वर्मा, ए.के. (2019). डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के चिन्तन में सामाजिक न्याय। *इंटरनैशनल जरनल ऑफ पोलिटिकल साइंस एण्ड गर्वनैंन्स*, 1(1), 18–20।

यादव, आशा (2017). डॉ. भीम राव अम्बेडकर की शिक्षा संबंधी विचार और उनकी प्रासांगिकताएँ। इंटरनैशनल जरनल ऑफ एकेडमिक रिसर्च एण्ड डैवलपमैंट, 2(5), 1985–1088।

तिरदिया, हेमारात एवं कटारिया, कान्ता (2021). डॉ. भीमराव अंबेडकर का षिक्षा दर्षन। अपनी माटी, मुख्य पृष्ट, 30 मार्च

बबिता (2018). भीमराव अंबेडकर के भारतीय समाज के संदर्भ में सामाजिक विचार। *जरनल ऑफ स्कालरली रिसर्चज इन एलाइड एजूकेशन,* 14(11), 520–522।

बैरवा, बी. आर. (2020). भारतीय संविधान निर्माण और डॉ. बी. आर. अम्बेड़कर। इनोवेशन दृ रिसर्च कनसैप्ट, 5(8), 1–6।

तिरदिया, एच. एवं कटारिया, के. (2022) डॉ. भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन। अपनी माटी, शोध आलेख, मार्च 30, मुख्य पृष्ठ

यादव, ए.एस. (2019). डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन। *जर्नल ऑफ एडवांसिस एण्ड स्कॉलरली रिसर्च इन अलाईड एजुकेशन,* 16(4), 1709–1711।

नुसरत (2017) डा0 भीमराव अम्बेडकर एंव अन्य दलित सुधारवादी आन्दोलन। *जर्नल ऑफ आचार्य नरेन्द्र देव रिसर्च इंस्टीट्यूट,* 5(2), 96–100।

मौर्य, आर., एवं किरार, एस.के. (2019). डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक–आर्थिक विचार (एक शोध पत्र)। *रिव्यू ऑफ रिसर्च,* 8(8), 1–11।

वर्मा, ए.के. (2019). डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के चिन्तन में सामाजिक न्याय। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साईंस एण्ड गर्वनेन्स,* 1(1), 18–20।

कुमार, एम. (2020). भारत में दलित महिलाओं की दयनीय स्थितिः एक राजनीतिक विश्लेषण। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांन्सड एकेडमिक स्टडीज,* 2(3), 689–692।

चेंगटे, पी. (2016)। डॉ. अम्बेडकर का शैक्षिक विचारों पर सशक्तिकरणः एक समीक्षा। *इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* 6(1), 633–635।